7 जन्मभूमि

सुमित्रानंदन पंत
(जन्म : सन् 1900 ई., निधन : सन् 1977 ई.)

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत का जन्म उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले के कौसानी गाँव में हुआ था । उनकी प्रारंभिक शिक्षा कौसानी और अल्मोड़ा में हुई । मैट्रिक उत्तीर्ण करके आगे की पढ़ाई के लिए पहले वाराणसी फिर प्रयाग गये। सन् 1921 के गाँधीजी के असहयोग आंदोलन के कारण पढ़ाई छोड़ दी । सन् 1943-44 ई. में उदयशंकर के नृत्यकेन्द्र से संबंध और 'कल्पना' चित्र के निर्माण में सहयोग, सन् 1950 से 1957 तक 'आकाशवाणी' में हिन्दी सलाहकार रहे । छायावाद के शलाका-पुरुष, प्रकृति सौंदर्य के अनुपम चित्रकार, काव्यभाषा के समर्थ शिल्पी प्रौढ़ विचारक-कवि को इनके 'कला और बूढ़ा चाँद' पर साहित्य अकादमी से 'लोकायतन' पर सोवियत भूमि नेहरू पारितोषिक समिति से और 'चिदंबरा' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिले हैं । इनकी कविता छायावाद मार्क्सवाद, अरविंददर्शन, वैदिक चिंतन के सोपानों से बढ़ती हुई विश्वचेतना तक पहुँचती है। उन्हें पद्मविभूषण भी मिला है । 'वीणा', 'ग्रंथि', 'पल्लव', 'गुंजन', 'युगान्त युगवाणी', 'मधुज्वाल', 'ग्राम्या', 'युगपथ', 'कला' और 'बूढ़ा चाँद' आदि प्रमुख काव्य लिखे हैं । इनके अलावा नाटक, नीतिनाट्य, कहानी और उपन्यास भी लिखे हैं ।

जन्मभूमि काव्य में जन्मभूमि का महत्त्व बताते हुए पंतजी ने प्रकृति का गौरव गान किया है । भारत का वैभवशाली इतिहास, प्रकृति, महापुरुषों का वर्णन किया है । हमारे नारीरत्नों की बात बताते हुए पंतजी ने वसुधैव कुटुंबकम् की भावना साकार की है ।

जननी जन्मभूमि प्रिय अपनी, जो स्वर्गादपि चिर गरीयसी
जिसका गौरव भाल हिमाचल,
स्वर्ण धरा हँसती चिर श्यामल,
ज्योतिग्रथित गंगा यमुना जल,
वह जन जन के हृदय में बसी !

जिसे राम लक्ष्मण औ सीता
बना गए पद धूलि पुनीता,
जहाँ कृष्ण ने गाई गीता
बजा अमर प्राणों में वंशी !

सावित्री राधा-सी नारी
उतरीं आभादेही प्यारी,
शिला बनी तापस सुकुमारी
जड़ता बनी चेतना सरसी !

शांति निकेतन जहाँ तपोवन
ध्यानावस्थित हो ऋषि मुनि गण,
चिद् नभ में करते थे विचरण
जहाँ सत्य की किरणें बरसीं !

आज युद्धजर्जर जगजीवन
पुनः करेगा मंत्रोच्चारण,
वह वसुधैव बना कुटुंबकम्
उसके मुख पर ज्योति नवल-सी !
जननी जन्मभूमि प्रिय अपनी, जो स्वर्गादपि चिर गरीयसी ।

शब्दार्थ

गरीयसी श्रेष्ठ **ज्योतिग्रथित** ज्योति से गुँथा हुआ **आभा** प्रकाश **जर्जर** जीर्णशील **वसुधा** पृथ्वी **स्वर्गादपि** स्वर्ग से भी **चिद्** चेतना, ज्ञान

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) जननी जन्मभूमि ..... से महान है ।

(अ) पृथ्वी (ब) आकाश (क) स्वर्ग (ड) नर्क

(2) 'भारत का भाल' ..... है ।

(अ) हिमाचल (ब) विंध्याचल (क) माउन्ट आबू (ड) गिरनार

(3) गीता का गान करनेवाले ..... थे ।

(अ) वाल्मिकी (ब) द्रोणाचार्य (क) अर्जुन (ड) कृष्ण

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) जन-जन के हृदय में कौन-सी नदियाँ बसी हैं ?

(2) कृष्ण ने किस ग्रंथ की रचना की ?

(3) 'जन्मभूमि' में भारत की किन नारियों की बात बताई गई है ?

(4) शांतिनिकेतन क्या है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) हिमालय के बारे में जन्मभूमि कविता में क्या कहा है ?

(2) कवि ने धरती के गुनगान कैसे गाये हैं ?

(3) शांति, सत्य, अहिंसा का प्रचार करनेवाले 'भारतीय महापुरुषों' के नाम बताइए ।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) कवि ने जन्मभूमि को स्वर्ग से महान क्यों बताया है ?

(2) 'जन्मभूमि' में भारत भूमि की क्या-क्या विशेषताएँ बताई गई है ?

(3) कविता के आधार पर भारतीय नारी की महानता का वर्णन कीजिए ।

(4) भारत 'विश्व शांतिदूत' क्यों कहलाता है ?

5. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :

(1) जिसका गौरव भाल हिमाचल ।

(2) जड़ता बनी चेतना सरसी !

(3) वह वसुधैव बना कुटुंबकम् ।

6. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द दीजिए :

जननी, ज्योति, शिला, विचरण, गौरव, पुनीत

योग्यता-विस्तार

- इस गीत का सहगान कीजिए ।
- बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय रचित 'वंदेमातरम्' गीत याद कीजिए और उसकी तुलना इस काव्य से कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'अनेकता में एकता' विषय पर छात्रों को बताइए ।
- भारत के विभिन्न प्रदेशों के नृत्य पर आधारित एक कार्यक्रम का आयोजन कीजिए ।

●